दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR With ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
प्रतिमानाटकम् (तृतीय अंक)
(Important Points)
Part -6
LIVE
18-08-2024 08:00 AM

प्रतिमानाटकम्

मङ्गलाचरण

सीताभवः पातु सुमन्त्रतुष्टः सुग्रीवरामः सहलक्ष्मणश्च।
यो रावणार्यप्रतिमश्च देव्या विभीषणात्मा भरतोऽनुसर्गम् । 1।।

भावार्थ- वे भगवान् राम सदैव हमारी अथवा आपकी रक्षा करें जो सीता को सुख देने वाले, सुमन्त्र (सारथि और अच्छी मन्त्रणा) से संतुष्ट, सुग्रीव (सुन्दर ग्रीवा वाले, वानरराज के मित्र) तथा अभिराम (सुन्दर) हैं,

और जिनके साथ लक्ष्मण हैं, सीताहरण के कारण जिन्हें रावण का शत्रु बनना पड़ा, जो वीरता में अद्वितीय और विभीषण (शत्रुओं के लिए भयंकर) स्वरूप हैं तथा जो सदा संसार का पालन एवं रक्षा करते हैं।

* इस मङ्गलाचरण में भगवान् राम (विष्णु) की स्तुति की गयी है।

* इसमें आशीर्वाद तथा मुद्रालङ्कार के प्रयोग से कथावस्तु का भी निर्देश है, अतः पत्रावली नान्दी है।

* इसमें आठ पदों वाली नान्दी का प्रयोग है।

* उपर्युक्त पद्य में परिकर अलङ्कार एवम् उपजाति छन्द है।

प्रतिमानाटकम् की संक्षिप्त कथावस्तु

प्रथम अङ्क

* राम के अभिषेक के समय नाटक का प्रारम्भ होता है।
* अकस्मात् अभिषेक के बाजे बंद हो जाते हैं तथा सीता सशंकित हो जाती हैं।
* राम को अभिषेक से उठना पड़ता है तथा वन जाने की आज्ञा मिलती है।
* राम, वन जाने से पूर्व सीता से मिलते हैं।
* सीता और लक्ष्मण को साथ लेकर राम वन की ओर प्रस्थान करते हैं।

द्वितीय अङ्क

*दशरथ अपने पुत्रों एवं पुत्रवधू के वियोग में विलाप करते हैं।

* अयोध्या के सभी जीवधारी राम के वनगमन से क्षुब्ध हैं।

* कौशल्या आदि रानियाँ महाराज दशरथ को सान्त्वना दिलाती हैं।

* दशरथ, सुमन्त्र से रामादि का समाचार पूछते हैं।

* शोक से व्याकुल महाराज दशरथ की मृत्यु हो जाती है।

तृतीय अङ्क

* भरत, सुमन्त्र के साथ अपने ननिहाल से अयोध्या आते हैं।

* भरत रास्ते में अयोध्या के निकट एक प्रतिमागृह में दशरथ तथा उनसे पूर्ववर्ती राजाओं की प्रतिमा का अवलोकन करते हैं।

* पुजारी द्वारा भरत को ज्ञात होता है कि महाराज दशरथ की मृत्यु हो चुकी है।

* भरत वहीं मूर्च्छित हो जाते हैं तथा होश में आने पर समस्त घटनाओं को पुजारी से पूछते हैं।

* घटनाओं को सुनकर भरत अपनी माता कैकेयी की भर्त्सना करते हैं।

* भरत बहुत दुःखी होते हैं तथा राम को लौटाने के लिए सारथि सुमन्त्र के साथ अयोध्या से दण्डकारण्य को प्रस्थान करते हैं।

Tue

चतुर्थ अङ्क

* भरत, राम आदि से मिलते हैं और स्वयं को निर्दोष बताते हैं।

* भरत, राम को लौटाना चाहते हैं लेकिन राम, पिता की आज्ञा बताकर मना कर देते हैं तत्पश्चात् भरत भी वहाँ से लौटने को तैयार नहीं होते।

* भरत इस शर्त पर अयोध्या जाने को तैयार होते हैं कि 14 वर्षों के पश्चात् राम, राज्यभार को स्वीकार कर लेंगे।

* राम की चरणपादुका लेकर भरत अयोध्या लौट आते हैं।

पञ्चम अङ्क

* इस अङ्क में संन्यासी वेशधारी रावण का प्रवेश होता है।

* राम, रावण को आसन पर बैठाते हैं और उससे अपने पिता दशरथ के श्राद्ध के विषय में बात करते हैं।

* रावण, राम को बताता है कि श्राद्ध कर्म में काञ्चन-पार्श्व नाम के मृग की भी आवश्यकता पड़ती है।

* राम, काञ्चन-पार्श्व मृग को लाने के लिए बाहर निकलते हैं तथा मौलिक रूप में आकर रावण, सीता का हरण कर लेता है।

* सीता का विलाप सुनकर जटायु सीता को बचाने के लिए जाता है।

षष्ठ अङ्क

* सीता को छुड़ाने के लिए जटायु, रावण से युद्ध करता है और रावण द्वारा मार दिया जाता है।
* सुमन्त्र द्वारा भरत को सूचना मिलती है कि सीता का हरण हो गया।
* भरत अपनी माता कैकेयी को उलाहना देते हैं तथा कैकेयी अपने दोष का परिहार सुनाती हैं।

* श्रवणकुमार के पिता का शाप का वृत्तान्त, सुमन्त्र के मुख से सुनकर भरत अपनी माता से क्षमा माँगते हैं।

* रावण से युद्ध के लिए भरत और सुमन्त्र तैयारी करते हैं।

सप्तम अङ्क

* इस अङ्क में सूचना मिलती है कि राम, रावण को मारकर विभीषण को लङ्कापति बनाकर, सीता को साथ लेकर फिर से तपोवन में आ गये हैं।
* भरत अपनी माताओं के साथ राम से मिलने जाते हैं।
* सभी भाइयों की उपस्थिति में राम का राज्याभिषेक होता है और सब पुष्पक विमान से वापस अयोध्या लौटते हैं।
* भरतवाक्य के साथ नाटक समाप्त।

प्रतिमानाटकम् का भरतवाक्य

यथा रामश्च जानक्या बन्धुभिश्च समागतः।

तथा लक्ष्म्या समायुक्तो राजा भूमिं प्रशास्तु नः। (7/15)

भावार्थ- जिस प्रकार राम का सीता और बन्धुओं से सम्मिलन हुआ है, उसी प्रकार राज्यलक्ष्मी से युक्त हुए हमारे महाराज इस भूमि का पालन करें।

* प्रस्तुत भरतवाक्य में लोककल्याणार्थ की कामना की गयी है।

* इसमें अनुष्टुप् छन्द एवं दृष्टान्त अलङ्कार है।

प्रतिमानाटकम् के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

राम-

* राम इस नाटक के नायक हैं।

* वे धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न हैं।

* राम अनात्मश्लाघी एवं क्षमाशील हैं, कैकेयी द्वारा उन्हें वनवास

मिला है पर उन्हें उनके प्रति किञ्चितमात्र भी क्रोध नहीं आता है।

* राम आज्ञाकारी तथा दृढ़व्रती भी हैं।

* राम पितृभक्त, मातृभक्त तथा मातृ-प्रेमी हैं।

* सचमुच राम में देवोचित गुण हैं, इन गुण के कारण राम, देव बन गये हैं।

सीता-

* सीता इस नाटक की नायिका हैं।

* वे राम की अनुरूप सहधर्मचारिणी हैं।

* दोनों में अत्यन्त साम्य है जैसाकि पति-पत्नी में होना चाहिए।

* सीता दण्डकारण्य के सभी पशु-पक्षियों एवं पेड़-पौधों से प्रेम करती हैं।

* अतिथि सत्कार में सीता अत्यन्त निपुण हैं।

* सीता, राम की अर्धाङ्गिनी हैं, सीता के विना राम अपूर्ण हैं।

लक्ष्मण-

* लक्ष्मण इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं जो नायक राम के आस- पास ही रहते हैं।

* लक्ष्मण अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के हैं। जब उन्हें कैकेयी के षड्यन्त्र का पता चलता है तो स्त्रीजाति के समूल विनाश के लिए उद्यत हो जाते हैं।

* लक्ष्मण भ्रातृ-प्रेम के अवतार हैं और राम के उपासक हैं।

भरत-

* भरत भी इस नाटक के उत्कृष्ट पात्रों में हैं।

* भरत का चरित्र अत्युज्ज्वल है।

* वे अन्याय से प्राप्त राज्य को ठुकरा देते हैं और अपनी माता को फटकारते भी हैं।

* भरत का चरित्र निश्कलंक है। वे राम के चरणपादुका को आसनस्थ करके अयोध्यावासियों की सेवा करते हैं।

* अतः भरत राम के परम भक्त हैं एवं आदर्शों में राम से उच्च हैं।

दशरथ-

* दशरथ रामादि चारों भाइयों के पिता हैं। पुत्र उनके प्राण हैं।
* वे अयोध्या के नरेश एवं परमस्नेही पिता भी हैं।
* पुत्र के वियोग में वे विह्वल होकर प्राण त्याग देते हैं।
* राम को राजा बनाने की उनकी अभिलाषा अपूर्ण रह जाती है। * निराशा को हृदयस्थ किये हुए वे संसार से विदा हो जाते हैं।

सुमन्त्र-

सुमन्त्र इक्ष्वाकु कुल के वृद्ध सारथि हैं।

* वे अत्यन्त धीर, गम्भीर, बुद्धिमान् एवं निष्ठावान् हैं, इसलिए नाटक में उनकी महत्ता बढ़ जाती है।

* इक्ष्वाकु वंश पर एक के बाद एक विपत्ति आने से अपनी लम्बी आयु को ही दोषी ठहराते हैं।

अन्य पात्र-

* अन्य पात्रों में कौशल्या, शत्रुघ्न, रावण आदि हैं।

प्रतिमानाटकम् का परिचय

लेखक	- महाकवि भास
काव्यविधा	- नाटक
विभाजन	- 7 (सात) अङ्डों में
उपजीव्य	- रामायण
श्लोक संख्या	- 157

अङ्क	श्लोक संख्या
प्रथम	31
द्वितीय	21
तृतीय	24
चतुर्थ	28
पञ्चम	22
षष्ठ	16
सप्तम	15

योग	157
नायक	- राम
नायिका	- सीता
प्रतिनायक	- रावण
कञ्चुकी	- बालाकि
प्रतीहारी	- विजया
प्रधान/अङ्गीरस	- करुण रस

प्रतिमानाटकम् की सूक्तियाँ

* सर्वशोभनीयं सुरूपं नाम (अङ्क-1)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में अवदातिका नाम की सीता की सखी कहती है कि 'सुन्दर रूप पर सभी चीजें अच्छी लगती हैं।'

* स्वः पुत्रः कुरुते पितुर्यदि वचः कस्तत्र भोः ! विस्मयः ।1/5।

भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम कहते हैं 'यदि पुत्र अपने पिता की आज्ञा का पालन करता है तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है।'

* अल्पं तुल्यशीलानि द्वन्द्वानि सृज्यन्ते। (अङ्क-1)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम कहते हैं कि, 'विधाता एक जैसे बहुत कम बनाता है।'

* शरीरेऽरिः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा। (1/12)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम कहते हैं कि, "शत्रु शरीर पर वार करता है परन्तु स्वजन हृदय पर।"

* अनुचरति शशाङ्क राहुदोपेऽपि तारा पतति च वनवृक्षे याति भूमिं लता च। त्यजति न च करेणुः पङ्कलग्नं गजेन्द्रं व्रजतु चरतु धर्मं भर्तृनाथा हि नार्यः (1/25)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में लक्ष्मण कहते हैं कि, राहु के ग्रसित होने पर भी रोहिणी चन्द्रमा के पीछे चलती है। पेड़ के गिरने पर उसके साथ की लता भी साथ ही गिर पड़ती है।

कीचड़ में फंसे हुए हाथी को हथिनी कभी नहीं छोड़ती इसलिए इन्हें भी अपने साथ वन चलने दें और स्त्रीधर्म का पालन करने दें। क्योंकि स्त्रियों का पति ही सब कुछ होता है उसका साथ नहीं छूटना चाहिए।

* निर्दोषदृश्या हि भवन्ति नार्यो यज्ञे विवाहे व्यसने वने चा (1/29)

भावार्थ- प्रथम अङ्क में राम, नगरवासियों से कहते हैं कि, 'यज्ञ, विवाह, आपत्ति तथा संकट के अवसर पर स्त्रियों के दर्शन में कोई पाप नहीं होता।'

* पिपासार्तोऽनुधावामि क्षीणतोयां नदीमिव। (3/10)

भावार्थ - तृतीय अङ्ग में भरत कहते हैं कि, 'मैं अयोध्या की ओर उसी प्रकार जा रहा हूँ जिस प्रकार प्यासा व्यक्ति सूखी नदी की ओर भागता है।'

*** हस्तस्पर्शो हि मातृणामजलस्य जलाञ्जलिः। (3/12)**

भावार्थ- तृतीय अङ्क में पुजारी, भरत से कहता है कि, 'पुत्र के लिए माताओं के हाथ का स्पर्श प्यासे के लिए जल के समान है।'

- **गङ्गायमुनायोर्मध्ये कुनदीव प्रवेशिता। (3/16)**

भावार्थ तृतीय अङ्ग में भरत अपनी माता कैकेयी से कहते हैं। कि, 'मेरी माता (कौशल्या) और माता (सुमित्रा) के बीच खड़ी हुई तुम अच्छी नहीं लग रही हो जैसे गङ्गा और यमुना के बीच में क्षुद्र नदी।'

* गोपहीना यथा गावो विलयं यान्त्यपालिताः

एवं नृपतिहीना हि विलयं यान्ति वै प्रजाः। (3/23)

भावार्थ - तृतीय अङ्ग में सुमन्त्र, भरत से कहते हैं कि, 'जैसे ग्वाल के बिना गायें रक्षा न होने से नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार राजा के बिना प्रजा का नाश हो रहा है।'

- किं ब्रह्मघ्नानामपि परेण निवेदनं क्रियते। (अङ्क-4)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्ग में भरत कहते हैं कि, 'क्या ब्रह्महत्या करने वालों की भी सूचना दूसरे देते हैं अर्थात् नहीं।'

* अलमिदानीं व्रणे प्रहर्तुम्। (अङ्क-4)

भावार्थ- चतुर्थ अङ्क में भरत, राम से कहते हैं कि, 'घाव पर नमक मत छिड़किये।'

* पुरुषाणां मातृदोषो न दोषः। (4/21)

भावार्थ - भरत कहते हैं कि, 'सुपुरुष! माता का अपराध पुत्र पर नहीं लगाना चाहिए।'

राज्यं नाम मुहूर्तमपि नोपेक्षणीयम्। (अङ्क-4)

भावार्थ राम, भरत, से चतुर्थ अङ्क में कहते हैं कि, 'हे वत्स! राज्य की क्षणभर भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।'

* छायां परिहृत्य शरीरं न लङ्घयामि।

वाचानुवृत्तिः खल्वतिथिसत्कारा:। (अङ्क-5)

भावार्थ- पञ्चम अङ्क में रावण, राम से कहता है कि, 'जब छाया (स्त्री) को ही मैं छोड़ चुका फिर शरीर (पुरुष) को कैसे सेवा करने दूँ। प्रेमपूर्वक सम्भाषण ही अतिथिसत्कार है।'

* धिग् भोः स्वर्ग भीतदेवैर्निविष्टं धन्या भूमिर्वर्तते यत्र सीता। (5/17)

भावार्थ पञ्चम अङ्क में हरण करते समय रावण, सीता से कहता है कि, 'धिक्कार है कायर देवों से भरे स्वर्ग को, धन्य है यह पृथ्वी जिसमें सीता रहती है।'

* न व्याघ्रं मृगशिशवः प्रघर्षयन्ति 15/10

भावार्थ - रावण पञ्चम अङ्क में सीता से कहता है कि, राम और लक्ष्मण जैसे कायरों को पुकारने से क्या लाभ? कहीं मृग के बच्चे शेर का भी कुछ बिगाड़ सकते हैं?'

तिर्यग्योनयोऽप्युपकृतमवगच्छन्ति। अङ्क-6

भावार्थ षष्ठ अङ्क में सुमन्त्र, भरत से कहते हैं कि, 'तिर्यग्जाति (पशु-पक्षी) भी कृतज्ञ होते हैं।'

प्रतिमानाटकम् का पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

सूत्रधार - प्रमुख नट, मञ्च का अध्यक्ष

राजा - अयोध्या नरेश दशरथ

राम - नाटक के नायक, दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र भरत

लक्ष्मण सुमित्रा दशरथ के पुत्र कैकेयी दशरथ के पुत्र

भरत

शत्रुघ्न - सुमित्रा दशरथ के पुत्र

सुमन्त्र - वृद्ध सारथि

रावण प्रतिनायक, लङ्कापति

कञ्चुकी अन्तःपुर का वृद्ध ब्राह्मण

देवकुलिक - प्रतिमागृह का पुजारी

वृद्ध तापसी रावण और जटायु के युद्ध को देखने वाले

तापस दण्डकारण्य का एक तपस्वी

नन्दिलक आश्रम का सेवक

भट अधिकारी

स्त्री-पात्र

नटी - सूत्रधार की पत्नी

सीता - राम की पत्नी, नायिका

कौशल्या - राम की माता

सुमित्रा - लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता

कैकेयी - भरत की माता

अवदातिका सीता की सखी

चेटी - सीता की सेविका

प्रतीहारी - द्वारपालिका, विजया

नन्दिनी -कैकेयी की परिचारिका -

प्रतिमानाटकम् नाम की सार्थकता

नाटक के तृतीय अङ्क में महाराज दशरथ की मृत्यु के पश्चात् ननिहाल से लौटते हुए भरत ने मार्ग में अयोध्या के समीप 'देवकुल' नामक प्रतिमागृह में अपने दिवंगत पूर्वज के साथ जब महाराज दशरथ की भी प्रतिमा देखी तो उन्हें उनकी मृत्यु का पता चला। इसी तृतीय अङ्क की घटना के आधार पर ही इस नाटक का नाम प्रतिमानाटक रखा गया है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

* प्रतिमानाटक में विदूषक का अभाव है।

* अभिषेकनाटक में पूरी कथा के सन्निवेश न होने से असन्तुष्ट होकर भास ने प्रतिमानाटक की रचना की।

* भास के 13 रूपकों में प्रतिमानाटक सबसे बड़ा है।

* प्रतिमानाटक का हस्तलेख मलयालम लिपि में प्राप्त हुआ था।

* प्रतिमानाटक के द्वितीय एवं सप्तम अङ्क में मिश्र विष्कम्भक का प्रयोग है।

* तृतीय एवं चतुर्थ अङ्क में प्रवेशक का प्रयोग है।

* षष्ठ अङ्क में शुद्ध विष्कम्भक का प्रयोग है।